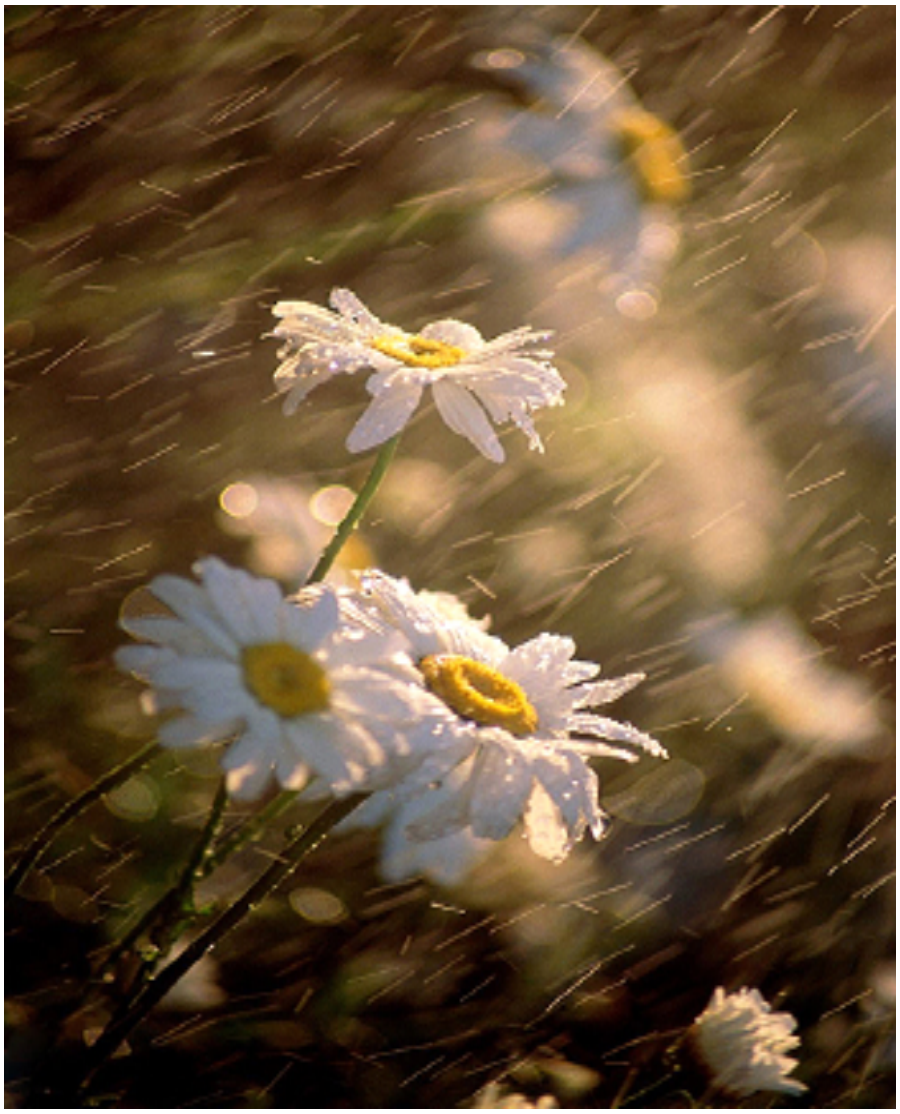

बाइबल अध्ययन सामग्री

आओ, हम ज्ञान ढूँढ़े, वरन यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यत्न भी करें; क्योंकि यहोवा का प्रगट होना भोर का सा निश्चित है; वह वर्षा की नाईं हमारे ऊपर आएगा, वरन् बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिस से भूमि सिंचती है। (होशे 6:3)

बाइबल शिक्षा के सिद्धान्त

उद्देश्यः

हमारी यह प्रार्थनापूर्ण हार्दिक इच्छा है कि प्रत्येक प्रतिभागी प्रत्येक सप्ताह परमेश्वर के वचनों के साथ नियमित समय बिताये, ताकि वह अपने सृ ि टकर्ता परमेश्वर के बारे में व उसके साथ चलने के बारे में सीख सके।

अहमियतः

- ताकि हम जीवन के हर प्रश्न के लिए परमेश्वर के वचन को बुनियाद बना सकें।
- ताकि हम स्त्रियों और पुरू ाों को परमेश्वर के प्रेम को समझने के लिए प्रोत्साहित कर सकें और प्रत्येक सप्ताह यीशु के प्रतिरूप को उनके बीच प्रदर्शित कर सकें।
- ताकि हम लोगों में परमेश्वर के वचनों को पढ़ने की चाह को उजागर कर सकें, क्योंकि परमेश्वर पिता हम सभी को अपने पास बुलाना चाहते हैं।
- ताकि परमेश्वर पर पूर्ण रूप से निर्भर होकर प्रत्येक कक्षा की साप्ताहिक सेवकाई के लिए प्रार्थना की जा सके।
- ताकि विभिन्न विश्वास या मतों के लोगों को परमेश्वर के वचन से सच्चाई को खोजने के लिए एक साथ आमन्त्रित किया जा सके।
- ताकि एकता के उद्देश्य को प्रेम और सेवा भावना के द्वारा प्रगट किया जा सके।
- ताकि उन्हें परमेश्वर द्वारा दिये गये लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रशिक्षित व तैयार किया जा सके।

लक्ष्यः

- जिससे प्रतिभागी परमेश्वर के वचनों के साथ नियमित तौर पर व्यस्त रहे (प्रश्नों के उत्तर देने में)।
- जिससे वे अपने दैनिक जीवन को परमेश्वर के वचन से जोड़ कर देख सकें।
- जिससे वे नियमित रूप से दूसरों के लिए प्रार्थना करें।
- उत्तर पाने के लिए वे ज़्यादा से ज़्यादा परमेश्वर के वचनों के पास आ सकें।
- जिससे सारे सदस्यों को चर्चा में ाामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।
- जिससे वे खुलकर और स्वेच्छा से बता सकें कि परमेश्वर ने उनके जीवन में क्या काम किये हैं और कर रहे हैं।

इफिसियों: मसीह की देह

लेखक :

आंतरिक व भीतरी प्रमाण प्रेरित पौलुस की ओर इशारा करते हैं, उसके इफिसियों के नाम लेखक होने का। एक यहूदी, एक फरीसी और कलीसिया को सताने वाले ' ाऊल' को जीवित परमेश्वर का सामना करना पड़ा, जब आरंभिक कलीसिया के विश्वासी उग्र हो गये। वह सम्पूर्ण रूप से परिवर्तित होकर विश्वास में आ गया। उसे एक नया नाम दिया गया और एक नयी बुलाहट उसे प्राप्त हुई। पौलुस पर परमेश्वर ने एक महान् रहस्य को खोला, जो सदियों से छिपा हुआ था, वह था गैर यहूदियों के 'बचाव का अनुग्रह' जो प्राप्त था। उसने तीन मिशनरी यात्रायें की इस सुसमाचार को फैलाने के लिए और सभी प्रचारकों में सबसे महानतम प्रचारक बना और नये नियम को लिखने में अपने योगदान दिया। (प्रेरितों के काम में उसके वार्तालाप का विवरण है ,उसकी बुलाहट और तीनों प्रचार यात्राओं का वर्णन, जो उसने गैर यहूदी क्षेत्रों में कीं) पौलुस की साक्षी इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर किसी भी जीवन और हृदय को बदल सकता है।

समय :

अधिकतर लोग विश्वास करते हैं कि पौलुस ने इफिसियों की पुस्तक 60–62 ईस्वी में लिखी। यह समय प्रेरितों के काम 28 अध्याय अनुसार वह था, जब पौलुस को रोम में बंदीगृह में 2 व ा के लिये रखा था। परमेश्वर ने यह ाान्ति का समय और पौलुस के जीवन में कठिनाइयाँ दूसरों के भले के लिए दीं। जब उसकी सेवा स्थायी हो गई और वह सुसमाचार का प्रचार रोम के सिपाहियों, यहूदी मंदिरों के गुरूओं और जो उससे बंदीगृह के समय मिलने आते थे, तक सीमित हो गया। उसने चार और "कैदी पत्रियाँ" इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलिस्सियों और फिलेमोन के नाम लिखीं। तीन पत्रियाँ जिनमें इफिसियों भी ाामिल है, पौलुस ने उन जगहों की कलीसियाओं के नाम लिखीं। जो उसने अपनी दूसरी प्रचार यात्रा के समय खोज की थी। (प्रेरितों के काम 20:1–3)

श्रोतागण् :

एशिया के राम क्षेत्र में (गैर यहूदी ाहर) सैनिक नूह का ाहर था। एक व्यस्त बन्दरगाह ाहर, यह अन्य–अन्य दिशा से आये भिन्न–भिन्न प्रकार के लोगों से भरा था। पौलुस की दूसरी यात्रा के अन्त में वह एक छोटी–सी मुलाकात के लिये इफिसुस गया और वापस आने की प्रतिज्ञा की (प्रेरितों के काम 18:20–31) और वह वापस भी आया। अपनी सेवा की तीसरी यात्रा में, परमेश्वर ने ऐसा किया कि वह 3 व र्ा तक इफिसुस में रहा (प्रेरितों के काम 20:31)। इस समय में कुछ विश्वास योग्य व्यक्तियों ने यीशु के सुसमाचार को फैलाया और कलीसिया में वृद्धि की। उस समय इफिसुस के लोग, मूर्तिपूजक, अन्धविश्वासी और रोम की देवी डायना को पूजने वाले थे। परन्तु जब उनका सामना सुसमाचार से हुआ तो बहुत से लोग सच्चे परमेश्वर की ओर मुड़ गये। उन्होंने अपनी जादू–टोनों की किताबें जला दी और अपनी पुरानी जिन्दगी को छोड़कर, **यीशु मसीह** में नयें जीवन को प्राप्त किया। क्या आपके जीवन में ऐसा कुछ है, जिसे बाहर करना ज़रूरी है? ताकि परमेश्वर आपको पूर्ण स्वतंत्रता और आपको एक नये रूप में आपका प्रयोग करे। आईये, परमेश्वर से पूछें ,ताकि वह हमारी आँखों को खोले, ताकि हम अपने जीवन में जो कोई पाप अभी भी हमारे अन्दर है, उसको देखकर दूर करें।

विषय :

यह निर्देशित पत्र व्यवहारिक सलाह और प्रोत्साहनों से भरा है, जो हमें यीशु मसीह की बहुत सारी आशी ाों के बारे में याद दिलाता है और एक योग्य जीवन जीने के लिये सचेत करता है। यह वि ाय दो भागों में बाँट दिया है: स्थिति व पद का सत्य और व्यवहारिक सत्य। आरम्भिक तीन अध्यायों में पौलुस परमेश्वर के उद्धार की योजना और प्रभु में विश्वासी होने पर हमारे पद को स्प ट करता है। हम याद करते है जो प्रभु ने हमारे लिये कर दिया, हमारी भरपूर आशी ों और प्रभु के द्वारा हमारा परमेश्वर से संबंध। पौलुस कहता है वह चीजें जो हमारे जीवन में प्रमाण रूप से होनी चाहिये, क्योंकि प्रभु ने हमें अपने पास बुलाया है। वह हम पर उन बातों व सत्यों को उजागर करेगा जो पहले नहीं की गई – यहूदी और गैर यहूदी एक समान उद्धार के उपहार के लिये आमंत्रित किये गये। वह सभी यीशु की देह में सहभागी होने और एक ही उद्देश्य को पूरा करने के लिये सम्मिलित किये गये और उस मेल से परमेश्वर का प्रेम और अनुग्रह आलौकिक स्वर्गीय स्थानों के सामने प्रस्तुत कर सकें। पौलुस ने इस वि ाय को बहुत ही खूबसूरत प्रार्थना जो वचन में दी है, से समाप्त किया है (इफिसियों 2:14–19)। उसने पिता से अपनी आत्मा की ाक्ति से उन्हें मज़बूत और स्थिर करे, जो प्रभु

उनके हृदय में विश्वास के द्वारा स्थापित करे, ताकि वह परमेश्वर के अन्तरंग प्रेम को जाने और अन्त में परमेश्वर की परिपूर्णता से भर जायें।

अध्याय 4 परमेश्वर के उद्धार की योजना और उसकी व्यवहारिक में हमारे कर्तव्य को प्रगट करता है। वह कलीसिया की एकता से ुरू हुआ। आगे उसने हम जैसे विश्वासियों को अपने जीवन के प्रति निर्देश दिये हैं कि हमें स्वार्थीपन और आत्मसंतु ि ट के फंदे व छल से बचना चाहिये। इसी कारण से पौलुस हमें अंतिम पाठ में पूर्णरूप से सचेत करता और सशस्त्र होने के लिये आग्रह करता है, ताकि ारीर, ौतान और इस संसार के विरोध में युद्ध व संग्राम कर सकें। अन्ततः हमारा ध्यान परमेश्वर के वचन और आत्मा (6:10–17 व निरंतर प्रार्थना (6:18) पर केन्द्रित रहें।

यह दोनों ही वि ाय इस सम्मिलित सिद्धान्त का समर्थन करते हैं कि हम प्रभु यीशु में एक नयी सृ ि ट हैं। इस पत्र में अनेकों बार पौलुस ने ाब्द प्रयोग किया कि "प्रभु यीशु में" यह एक विश्वासी के लिये बदलाव की सच्चाई है और इसी कारण से पौलुस ने पहले और तीसरे अध्याय में प्रार्थना की, ताकि हम सम्भलकर उसे प्रयोग करें। क्योंकि हम नयी सृ ि ट है, जो यीशु के साथ मर गये थे और उसके साथ जीवित हो उठे, हमने उसकी पहचान और उद्देश्य को अपनाया है। यही सत्य पौलुस के पत्रों का आधार है।

इफिसियों: मसीह की देह

शिक्षा 1: अध्याय 1

मुख्य वाक्य: परमेश्वर ने हमें समय से पहले अपने अनन्त के उद्देश्य के लिये चुन लिया।

<u>पहला दिन</u>

पढ़ें – प्रेरितों के काम 18:24–28 और 19: 1–7

1. इफिसुस में कौन और क्या पढ़ाया गया?

2. पौलुस कौन–सी अतिरिक्त सूचना लाया, जो इफिसुस के लिये नयी थी?

3. इफिसुस ने यह विश्वास दिलाने के लिये कि यीशु ही प्रभु और बचाने वाला है क्या किया?

4. परमेश्वर ने उनके निर्णय को किस प्रकार माना जैसे उसने पेंतिकोस्त के दिन विश्वासियों के साथ किया था?

<u>दूसरा दिन</u>

पढ़ें – प्रेरितों के काम 19: 8–23

1. पौलुस के कौन से ाब्द उनके कार्य और प्रतिक्रिया की बताते हैं, जो उसके वचन को सुनते थे?

2. यीशु के नाम के अधिकार के बिना जब ौतान ताक्तों का सामना किया जाता है, तो उससे हम क्या समझते हैं?

3. प्रेरितों के काम 18:9–14 में जिस जादू के तरीके का प्रयोग किया गया, उसकी सूची तैयार करें।

4. उसके कौन से प्रकार आप आज अपने समाज में देखते हैं?

5. क्या यह आपकी सहायता करती है कि कैसे प्रार्थना की जाये?

तीसरा दिन

पढ़ें – प्रेरितों के काम 19 अध्याय

1. इफिसियों के लोगों ने कैसे स्वयं को जादू–टोने, के कार्यों से साफ किया?

2. पौलुस ने कितना समय एशिया में प्रचार करने और शिक्षा देने में व्यतीत किया?

3. जब यीशु का संदेश 'कि केवल वही एक सच्चा परमेश्वर है प्राप्त होता है, तो हमें कैसी प्रतिक्रिया करनी चाहिये?

चौथा दिन

पढ़ें – इफिसियों 1:1–14

1. पौलुस किसको लिख रहा है?

2. उन तरीकों के नाम बताओं जिनसे परमेश्वर विश्वासियों को आशी ा देते थे?

   (क) पूर्व आशी ा (पद 4–6)

   (ख) वर्तमान आशी ा (पद 7–14)

   (ग) भवि य की आशी ा (पद 13–14)

3. आप यीशु मसीह में क्या हो इसके लिये प्रार्थना में धन्यवाद दो?

पाँचवाँ पद

पढ़ें – इफिसियों 1:15–23

1. पौलुस ने किन दो विशे ाताओं के लिये परमेश्वर का धन्यवाद किया?

2. आप क्या चाहते हैं कि लोग जाने आप किसके लिये खड़े हो?

3. इफिसियों के पद 17–18 में पौलुस ने किन–किन चीज़ों के लिये परमेश्वर से आग्रह किया?

4. उन चीज़ों की सूची बनाये जो पौलुस ने चाहा कि इफिसियों के लोग जाने पद 18, 19 में?

5. क्या आप किसी के लिये यह प्रार्थना कर सकते हैं कि जिसे आप जानते है?

6. परमेश्वर अपनी सामर्थ को उन पर कैसे दर्शाता है जो विश्वास करते हैं? (पद 20–22)

7. कौन कलीसिया का प्रधान है?

छठवाँ दिन

शिक्षा 1: "विश्वासियों के लिये आशी ें"

मूल पाठः	इफिसियों 1 अध्याय
मुख्य वचनः	इफिसियों 1:3 – "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशी ा दी है।"
मुख्य वाक्यः	परमेश्वर ने हमें समय से पहले अपने अनन्त के प्रयोग के लिये चुन लिया है।
जीवन का सिद्धान्तः	हमारा जीवन अच्छाइयों से परिपूर्ण है, क्योंकि परमेश्वर

ने अपने अनन्त का अभिप्राय व उद्देश्य दिया है।

सारांश : मूल भा ाा में पौलुस अपना पत्र स्तुति के गीत से आरम्भ करता है। (पद 3,4) और उसे एक वाक्य में लिख देता है। वह उन आत्मिक आशी ाों को लिखता है जो हमें परमेश्वर के बालक होने पर मिलती है ऐसे जैसे वह एक डगमगाता सत्य है। हमारे जीवन में सृ ट के करता परमेश्वर ने जीवन के मूल्य उंडेल दिये हैं। हम किसी प्रयोजन के लिये चुने गये हैं। उसने हमें अपने लिये पहले से तैयार कर रखा है। हमें उद्धार और क्षमा प्राप्त है उसके भरपूर अनुग्रह से। उसने अपनी इच्छा के रहस्य को हम पर प्रगट किया है अपने उद्देश्य के लिये सभी चीज़ों को एकत्रित किया है। हमें परमेश्वर के परिवार में सदस्यता प्राप्त है। और हम पर पवित्रात्मा की प्रतिज्ञा की मुहर लगी है। परमेश्वर की धरोहर उसकी महिमा के लिये। यह कितना ाक्तिशाली ज्ञान है और कैसा प्रोत्साहन हमारे हृदय के लिये है।

स्तुति के गीतों को देने के पश्चात् जिसे परमेश्वर ने पूरा किया, पौलुस ने यह प्रार्थना की कि हम इस सुसमाचार को सच में समझ सकें। उसने प्रार्थना में माँगा बुद्धिमानी की आत्मा और परमेश्वर के आलौकिक ज्ञान जिससे हम परमेश्वर को बेहतर रूप में समझ पायें। उसने यह भी प्रार्थना की कि परमेश्वर का सत्य हमारे व्यक्तिगत् अनुभव से हमारे जीवनों को अंतःकरण तक पलट कर रख दे।

1. परमेश्वर हमें अपने सत्य का ज्ञान और बुद्धि प्रदान करे।

2. परमेश्वर हमारी आशा और भरपूरी को समझने का कारण दे जो हमारे पूर्वजों की पैतृक सम्पत्ति (जो अब्राहम से आज तक) में है।

3. हमें उसकी अतुल्य महानता की ाक्तिओं – उसके पुनरूत्थान की ाक्ति जो आज भी प्राप्त है को समझने का ज्ञान दे।

इब्रानियों और कुलिस्सियों के आरम्भ की तरह पौलुस ने यीशु की महानता में इफिसियों के नाम पत्र लिखा। परमेश्वर ने यीशु को प्रभु होने अर्थात "देह का सिर" होने का सम्पूर्ण अधिकार दिया। चर्च देह है और वह उसका सिर। हमें उसकी इच्छा को व्यक्त और कार्यों को करना होगा। देह का उद्देश्य है "उसी की परिपूर्णता जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।" (इफिसियों 1:23) क्या कभी आपने इस प्रकार साचा है? क्या कभी आपने ऐसा सोचने की कोशिश की है, जैसा परमेश्वर से आपके लिये सोचता है – ऐसी देह जिसकी परिपूर्णता

परमेश्वर से भी हो? आप एक क्षण में अपने ाब्दों में लिखें और प्रार्थना करें औरों के लिये भी।

हमारा जीवन अच्छाइयों से परिपूर्ण है, क्योकि परमेश्वर ने हमें अनन्त का अभिप्राय व उद्देश्य दिया है।

इफिसियों: मसीह की देह

शिक्षा 2: अध्याय 2

मुख्य वाक्य: इससे पहले कि हम अजनबी थे और परमेश्वर से अलग हो गये, परन्तु विश्वासी बनकर हम परमेश्वर के निवास स्थान हैं।

पहला दिन

पढ़ें – इफिसियों 2:1–3

1. मनु य की स्थिति और कार्यों का विवरण दें, जब वह पाप में मृतक होता है?

2. प्रभु यीशु से परे, हम किस योग्य है?

दूसरा दिन

पढ़ें – इफिसियों 2:4–10

1. उन चीज़ों के बारे में बताओं जो परमेश्वर ने हमारे लिये किया (या करेगा)?

2. पद 8–9 के अनुसार हम किस प्रकार बचाये गये?

3. कोई किस प्रकार विश्वास पा सकता है? (रोमियों 10:17 देखे)

4. हम क्या करने के लिये रचे गये?

5. हम क्या विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने क्या अच्छा आपके लिये तैयार किया है जो आपको इस समय अपने जीवन में करना है?

तीसरा दिन

पढ़ें – इफिसियों 2:11–22

1. हम गैर यहूदियों की परमेश्वर के सामने क्या स्थिति है वर्णन करें।

2. हम गैर यहूदियों की परमेश्वर के बाद क्या स्थिति है वर्णन करें।

3. कौन–सी स्थिति उत्तम है यह वर्णित करें?

चौथा दिन

पढ़ें – इफिसियों 2:13–18

1. पद 13 के अनुसार क्या आपको परमेश्वर के पास आने के लिये आज्ञा देता है?

2. पद 14 में प्रभु का किस प्रकार वर्णन करता है? (पद 15 व 17 देखें)

3. हम अपने परमेश्वर पिता तक कैसे पहुँच सकते हैं? पद (17 व 18)

4. क्या आप अपने जीवन में इसका अनुभव करते हैं?

पाँचवाँ दिन

पढ़ें – इफिसियों 2:19–21

1. इस अध्याय के इस अनुच्छेद अनुसार मसीही लोगों को किस प्रकार सामाजिक और जातीय अवरोधों को देखना चाहिये?

2. इन पदो ंके अनुसार कौन स्थापना व नींव है और कौन सिरे का पत्थर। (देखिये यशायाह 26:16 और 1 कुरिन्थियों 3:11)

3. 1 कुरिन्थियों 3:16 अनुसार प्रभु क्या कहता रहता है?

4. परमेश्वर का मन्दिर आज कहाँ है?

छठवाँ दिन

शिक्षा 2: **"एक विश्वासी की स्थिति"**

मूल पाठः	**इफिसियों 2 अध्याय**
मुख्य वचनः	**इफिसियों 2:10 – "क्योंकि हम उसके बनाये हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गये, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया।"**
मुख्य वाक्यः	**इससे पहले कि हम अजनबी थे और परमेश्वर से अलग हो गये, परन्तु विश्वासी होकर हम उसके निवास स्थान हैं।**
जीवन का सिद्धान्तः	**परमेश्वर सदा हमारे साथ है और हमें कभी भी न छोड़ने की उसकी प्रतिज्ञा है।**

सारांशः अध्याय 2 हमारी आत्मिक स्थिति से आरम्भ होता है जो यीशु के क्रूस पर किये गये कार्य से पूर्व थी। मनुष्यता से गिरकर हम आत्मिक रूप से मर चुके थे। हम परेमश्वर के लिये अनाज्ञाकारी ही नहीं वरन् उसके लिये मर चुके थे। हम में कोई आत्मिक जीवन नहीं था। पाप वह नहीं था जो हमने किया वरन् हम स्वयं पापमय थे। हम परमेश्वर के ात्रु थे ौतान से संधि और ऐसे बच्चे रो ा के योग्य होते हैं। यह एक बुरी सूचना है और इसे बढा–चढाकर नहीं कहना चाहिये। परन्तु गैर यहूदियों के लिये यह सूचना और भी बुरी हो सकती है। हम भी अलग हो गये थे, इस्राएल की नागरिकता से पृथक, परमेश्वर की वाचा और प्रतिज्ञा के लिये अजनबी, बिना आशा और ईश्वर के इस संसार में (पद 12)।

सौभाग्य से, पौलुस ने इस बुरी सूचना को आशा को अभिभूत संदेश से रोक दिया। इस में ुभ सूचना, बुरी ख़बर पर हावी हो गई। "परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, उसने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है) (2:4,5) क्रूस और प्रभु के लहू के द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल हुआ। हम मर चुके थे फिर भी हमें उसके समीप किये

गये। हम उसके ात्रु थे फिर भी यीशु के द्वारा हम परमेश्वर के साथ ाान्ति के अधिकारी हो गये। यह परमेश्वर के अनुग्रह और उसकी करूणा जो हमारे प्रति थी से हुआ। हमारे किसी कार्य से यह नहीं हुआ। जैसे पद 8,9 कहती है "विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से हो कि कोई घमंड करे।" पौलुस ने इस भाग को इस स्मरण से नि क र्ा किया है कि परमेश्वर हमारे उद्धार को इससे सुरक्षित व निश्चित करता है कि हम फल लायें। पद 11 के आरम्भ में वह ुभ समाचार और अच्छा हो जाता है जैसे हम परमेश्वर से मेल–मिलाप कर एक हो गये वैसे ही हम आपस में एक दूसरे से मिलकर एक हो जायें। गैर यहूदी होने पर हम प्रभु के लोगों की वाचा के व्यक्तियों से नागरिक और भाईयों के समान जोड़े गये हैं। प्रभु यीशु का कार्य हमें परमेश्वर में आपसी ाान्ति प्रदान करता है। यह नफरत की दीवार को गिराकर व नियमों और नफरत दो समूहों को एक साथ जोड़ता है। यह परमेश्वर का आरम्भ से ही यह उद्देश्य है कि सारे लोग एक देह समान एक साथ जोड़े जायें। पद 20,21 में पौलुस कहता है कि हम सब "पवित्र मन्दिर" में प्रभु के साथ जो कोने के सिरे का पत्थर है में जोड़े जायें। क्रूस पर यहूदी और गैर यहूदी के बीच के अवरोधों को तोड़ दिया। हम अब हम एक नया मानव है। देशों के मध्य जातीय रंग भेद, सामाजिक स्तर, राजनैतिक, धर्म संबंधी और संस्कृति का भेद एक कड़वा अनुभव और संसार को धमकाता है। इसलिये यह सब मसीहों के बीच गिरा अथवा समाप्त कर दिये है। हमस ब एक परिवार, भाई और बहन, परमेश्वर के पुत्र हैं क्योंकि हमस ब क्रूस और यीशु के लहू द्वारा एक किये गये हैं। क्या कभी आप गलती से अपने प्रभु में भाई या बहन से अलग हुए है?

परमेश्वर सर्वदा हमारे साथ है और उसकी प्रतिज्ञा है कि हमें कभी नहीं छोड़ेगा।

इफिसियों: मसीह की देह

शिक्षा 3: अध्याय 3

मुख्य वाक्य: परमेश्वर का उद्देश्य अब कलीसिया के द्वारा पहचाना गया।

पहला दिन

पढ़ें – इफिसियों 3:1–6

1. आप क्या समझते हैं कि पौलुस ने कहा कि वह यीशु मसीह का बन्दी है। (3:1) जब वह रोम में सांकलों में बंधा था?

2. वह क्या रहस्य था जो अन्य पीढ़ी को पता नहीं था?

3. वह रहस्य क्यों यहूदी लोगों के लिये स्वीकारने में कठिन था? (देखें रोमियों 16:25,26)

4. आज यहूदी और गैर यहूदी क्या बाँटते हैं?

दूसरा दिन

पढ़ें – इफिसियों 3:7–13

1. पद 8 में पौलुस की क्या बुलाहट थी?

2. पद 9–10 के अनुसार किसे परमेश्वर के गूढ़–ज्ञान के बारे में जानकारी प्राप्त हुई?

3. हम कैसे आज परमेश्वर के पास आ सकते हैं?

तीसरा दिन

पढ़ें – इफिसियों 3:14–21

1. पौलुस अपनी प्रार्थना के लिये नया कारण देता है?

2. पौलुस अपनी प्रार्थना में किस चीज़ की माँग करता है?

3. क्या आप किसी के लिये यह प्रार्थना करेंगे जिसे आप जानते हैं?

4. पद 20 कैसे विश्वास, आपकी प्रार्थना के जीवन को बदल सकता है?

चौथा दिन

पढ़ें – इफिसियों 3:14–21

1. आप परमेश्वर से किस प्रकार अनुरोध कर सकते हैं कि वह "सभी माप से परमेश्वर की भरपूरी को भर दें?"

2. विवरण दें कि जब एक व्यक्ति परमेश्वर के माप से बहुतायत से भर दिया जाता है तो वह कैसा दिखता है अपने परिवार में और अपनी प्रतिदिन के जीवन में?

पाँचवाँ दिन

पढ़ें – इफिसियों 3:20–21

1. क्या कभी आपने जो परमेश्वर से माँगा है उसने उससे भी अधिक दिया हो? वर्णन करें।

2. वह क्या ाक्ति है जो हममें कार्य करती है?

3. पद 20–21 में आप परमेश्वर के बारे में आप क्या सीखतें हैं, जो आपकी सहायता करता है जहाँ आज आप हैं?

छठवाँ दिन

शिक्षा 3: "चर्च का रहस्य"

मूल पाठः	इफिसियों 3 अध्याय
मुख्य वचनः	इफिसियों 3:6 – 'अर्थात यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं।
मुख्य वाक्यः	परमेश्वर का उद्देश्य कलीसिया के द्वारा लोगों में पहुँचाया जाता है।
जीवन का सिद्धान्तः	हम अब मरे हुए नहीं वरन् अनुग्रह की कहानी बताने के लिये जीवित हैं।

सारांशः भूमिका पर आते हैं। पौलुस प्रभु यीशु के प्रेरित और गैर यहूदियों के बीच अनुग्रह के प्रचारक के रूप में अपने कैद किये जाने के उद्देश्य और कारण का लिखित रूप में वर्णन करता है। उसने इफिसियों को यह सम्पूर्ण विश्वास दिलाया कि यह समाचार सीधा उसे परमेश्वर पिता से पवित्र आत्मा के द्वारा प्राप्त हुआ है। उसने दो सत्यों को उजागर किया। पहला, यह कि परमेश्वर ने नियमों की ज़रूरत को पूरा किया और इसलिये उसकी आवश्यकता का समापन करता है जो या तो यहूदी हों या गैर यहूदी। और दूसरा यह कि गैर यहूदी भी यहूदियों के समान खड़े हो जैसे प्रभु यीशु के उत्तराधिकारी के समान। सभी मनु य हर जगह चाहे वह किसी भी वंश या किसी भी संस्था से जुड़े हों। परमेश्वर के सामने एक बराबर स्थान रखते हैं। सभी का स्वागत है परमेश्वर विश्वास के आधार पर उसके राज्य में आने का। इस महान विनम्रता का रहस्य संसार में पहले उजागर नहीं था, जबकि झलक पुराने नियम में निहित थी। उदाहरण अब्राहम की वाचा सारे संसार के देशों के लिये अशी ा की प्रतिज्ञा थी। और जब उसके पूरा होने का समय आया तब परमेश्वर ने पौलुस प्रेरित को चुना जो स्वयं को सब प्रेरित में सबसे छोटा मानता था वीर याद्धों की नाईं महान् यानी भवि यवाणी जो परमेश्वर की विविध ज्ञान को यहूदी और गैर यहूदी में एक समान रूप से बताये। इस उच्चतम रहस्य की भवि यवाणी के आलौकिक प्रकाश में, पौलुस ने अध्याय 3 को एक अन्य प्रार्थना से समाप्त किया। उसने पिता के सामने झुककर कहा कि वह उसे पवित्र आत्मा की सामर्थ से आत्मा में बदल दे। ताकि वह यीशु के प्रेम को जो मनु य की समझ से परे है समझा सके, ताकि हम प्रभु के उस प्रेम को सारी समझ से परे है और फिर परमेश्वर के माप की भरपूरी से भर जायें।

जैसे परमेश्वर की प्रार्थना का हमारे जीवन में उत्तम देता है, तो हम परमेश्वर के साधन बन जाते हैं ताकि संसार में परमेश्वर की योजना को पूरा करें और उसके अनुग्रह को दूसरों को दर्शायें। हम सभी के पास परमेश्वर के अनुग्रह की एक विशे ा प्रकार की कहानी है जो उसने हमारे जीवन में किया। पौलुस हमारी अनुग्रह की कहानियों को "परमेश्वर के ज्ञान के विविध प्रकार" कहता है। (3:10) वह भरपूर रंगों में अजब तरह से चमकते हैं। हर एक अलग है। परन्तु पूरे चित्र का परमावश्यक है कि परमेश्वर कौन है और वह किस प्रकार लोगों के जीवन में कार्य करता है और वह लोगों को अपनी ओर कैसे आकर्ा ित करता है। यही उसके अनन्त की योजना का वास्तविक प्रदर्शन है जो यीशु के द्वारा सम्पूर्ण हुआ। एक दिन सारी की सारी अतुल्य अनुग्रह की कहानियाँ एक बड़ी कहानी में जुड़ जायेंगी, और यह बहुत ही सुन्दर और जीत होगी जो ौतान के सैनिक दल और पाप के विनाश से महान होगी। जैसे ही लोग इस अनुग्रह को प्रभु के लोगों के ह्रदयों में देखेंगे तब हर एक जाति प्राजित, हर एक जीव्हा और हर एक देश का परिवर्तन हो जायेगा।

हम अब मरे नहीं है वरन् अनुग्रह की कथा सुनाने के लिये जीवित हैं।

इफिसियों: मसीह की देह

शिक्षा 4: अध्याय 4

मुख्य वाक्य: हम एकता में एक दूसरे के साथ जोड़े गये हैं और हमें देह का उपहार उसकी सेवा के लिये दिया है।

पहला दिन

पढ़ें – इफिसियों 4:1–3

1. पौलुस हमें कैसे कहता है अपनी बुलहाट में विश्वास पूर्ण चलन के लिये?

2. वह कौन–सी एकता है जिसकी हमें रक्षा करनी है?

3. हमें उस की किस प्रकार रक्षा करनी है?

4. क्या आप बता सकते हैं किस प्रकार अपने मूल विश्वास को छोड़े बिना हम इस ाान्ति की एकता को रख सकते हैं?

दूसरा दिन

पढ़ें – इफिसियों 4:4–10

1. इन पदो ंके अनुसार हम क्या चीज़े बाँट सकते हैं?

2. क्या आप अपनी बुलाहट के लिये कार्य कर रहे हैं?

3. नीतिवचन 6:16–19 में हमें किन चीज़ों को त्यागना चाहिये?

4. कौन है जो सर्वत्र है, सब में है और सबके द्वारा जी रहा है?

तीसरा दिन

पढ़ें – इफिसियों 4:11–13 और 1 कुरिन्थियों 12:1–11

1. किसने तय किया कि कौन क्या उपहार पायेगा और वह उपहार किस प्रकार दिखता है?

2. उस उपहार का नाम बताओ जिसे परमेश्वर ने चर्च को दिया?

3. हमारे उपहार के लिये क्या ज़िम्मेदारी है?

4. नीचे लिखे ाब्दों के लिये एक पद उसके सामने लिखें, जो एकता के प्रकार को इस अध्याय में वर्णित करता है।

   (क) एक देह

   (ख) आत्मा

   (ग) बुलाहट में आशा

   (घ) एक प्रभु

   (ङ) एक विश्वास एक बपतिस्मा

   (च) एक परमेश्वर सबका पिता

(रोमियों 1:17, रोमियों 8:9,10, 1 कुरिन्थियों 8:6, 12:13, इफिसियों 1:13,14, 17,18, फिलिप्पियों 2:11, कुलुस्सियों 1:1–18, 1 थिस्सुलिनिकियों 4+15–18, तीतुस 2:13, 1 यूहन्ना 3:3 और यहूदा 3)

5. एकता का लक्ष्य किस प्रकार दिखाई देवा है (पद 13)

चौथा दिन

पढ़ें – इफिसियों 4:14–16

1. आप किस प्रकार इसे अपने जीवन में क्रियान्नित कर सकते हैं?

   (क) सत्य बालें (सुमाचार का संदेश)?

   (ख) प्रेम में होकर सत्य बोलें।

   (ग) सब बातों में प्रभु में वृद्धि करो।

   (घ) एक जुट होकर देह में जुड़कर पूरे देह की सहायता करो?

पाँचवाँ दिन

पढ़ें – इफिसियों 4:17–32

1. पद 17–32 के अनुसार इस तालिका को पूरा करें।

अपने पुराने पन को छोड़े	नयेपन को अपना लें।

2. जो आपने पढ़ा और ऊपर इस तालिका मे लिखा है, आप प्रभु में अपने नयेपन का किस प्रकार वर्णन करेंगें?

3. ौतान किस प्रकार हमारे जीवन में कब्ज़ा कर सकता है? इसका क्या अर्थ है?

4. आपने इस सप्ताह अपने जीवन में क्या अलग प्रकार से करना ुरू किया है?

छठवाँ दिन

शिक्षा 4: "शारीरिक जीवन"

मूल पाठः	**इफिसियों 4 अध्याय**
मुख्य वचनः	**इफिसियों 4:1 – "जिस बुलाहट से तुम बुलाये गये थे, उसके योग्य चाल चलो।"**
मुख्य वाक्यः	**हम एकता के लिये एक साथ जोड़े गये हैं, और हमें देह का उपहार उसकी सेवा के लिये दिया गया है।**
जीवन का सिद्धान्तः	**जिस बुलाहट के लिये बुलाये गये हो उसके अनुसार जीवन जियो; हमें अपना पुरानापन छोड़कर नयेपन को अपनाना है।**

सारांश – पौलुस पत्र के प्रथम आधे भाग में सैधातिक सत्य से हट कर दूसरे आधे भाग में व्यावहारिक प्रयोग की ओर झुक गया। पौलुस, जो धार्मिकता के लिये सलाख़ों में था, हमें अपनी बुलाहट के अनुसार जीवन जीने अर्थात् उसके योग्य चाल चलने को कहता है। उसकी कड़ियाँ उसके किसी गलत कार्य का परिणाम नहीं था वरन् वह परमेश्वर के राज्य में उसकी महिमा के लिये पीड़ित हुआ। और जैसे पौलुस ने सुसमाचार के लिये सलाख़ों को सही बताया, वह कहता है कि हमें अपने आचारण को प्रदर्शित करना ज़रूरी है, ताकि वह दिखायें कि हमने संसार की सभी वस्तुओं को एक तरफ कर अपने परमेश्वर की वस्तुओं पर स्थिर रूप से आज्ञायुक्त हैं। हम प्रभु में जीवित किये गये हैं और उसके फल हममें प्रभु यीशु की योग्यताओं के रूप में निहित हैं। एक नयी सृ ट समान हर दिन नया पन प्राप्त कर हमें अपना नया

व्यक्ति को दूसरों को दिखाने के लिये आमंत्रित किया गया है। जिसमें – विनम्रता, दीनता, धैर्य, एक दूसरे को सह लेना और सबसे महत्वपूर्ण कि ाान्ति में एकता बनाये रखना। वह पुनः दोहराता है कि हम प्रभु यीशु की देह है इसलिये हमें एक–दूसरे के साथ एकबद्ध होना है। हम एक प्रभु के हैं, एक ही बुलाहट, समान आशा समान विश्वास और समान बपतिस्में पर विश्वास रखते हैं। जबकि हम एकता और प्रभु में समानता का आनन्द लेते हैं फिर भी हम समान नहीं है। चर्च को प्रभु में बहुत से दान दिये गये हैं जैसे– प्रेरित, भवि यद्वक्ता, प्रचारक, अगुवे और शिक्षक ताकि परमेश्वर के लोगों को संसार में उसका कार्य फैलाने के सब साधन प्राप्त हो और वह परिपक्वता में बढ़ें।

यह दान आगे रोमियों 12 और 1 कुरिन्थियों 12 अध्याय में विस्तार रूप से बताये गये हैं। यह प्राकृतिक योग्यता, निपुणता और सामर्थ से गड़बड़ाने नहीं चाहिये। यह सर्वोच्चता से अद्‌भुत तरीके से पवित्र आत्मा द्वारा विश्वासियों पर उंडेले गये हैं। (1 कुरिन्थियों 12:7–11) यह परमेश्वर के भवन (प्रभु की देह) को बनाने के लिये और सभी विश्वासियों को कार्य करने के लिये दिये गये हैं। यह हम सब को प्रभु की देह में जोड़ने के लिये दिये न कि अलग करने के लिये। हमारा आपसी प्रेम इन दानों से कहीं अधिक महत्व रखता है। उसी प्रकार हमारा मिलजुल कार्य करना अकेले कार्य करने से अधिक महत्वपूर्ण है। हमारा एक–दूसरे पर आश्रित होना स्वतंत्र होने से अधिक महत्व रखता है। जैसे देह के हर भाग का कार्य करना तभी देह बढ़ेगी और परिपक्व होती जायेगी। हमारा व्यवसाय हमारे वजूद का कारण इस कारण प्रभु यीशु ने हमें पृथ्वी पर रखा है ताकि हम अपने दानों अथवा उपहार जो प्रभु ने हमें दिया हैं को जान पायें और उन्हें प्रयोग करें। ऐसा करने से, हम कलीसिया के आदेश को पूरा करेंगे कि पवित्र–लोग सिद्ध हो जायें और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाये जब तक कि हम सब के खूब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जायें और एक सिद्ध मनुष्य न बन जायें और मसीह के पूरे डील–डौल तक न बढ़ जाएँ (इफिसियों 4:12–13) क्या आप अपने दान (योग्यता) को जानते हैं और वह किस प्रकार प्रभु की देह की वृद्धि के लिये व्यक्त की जाती है?

पौलुस हम विश्वासियों के लिये मन के बदलाव और पहचान के बारे में कहता है। हम परमेश्वर के लिये मृत समान थे और भ्र ट मन वाले और केवल देह के प्रति सोच थी। परन्तु प्रभु में नयी पहचान पाकर हम संसार की चीज़ों को त्याग कर परमेश्वर की चीज़ो का अनुसरण करते हैं।

पुरानापन त्याग कर	नयी सृ ि ट की पहन करें
झूठ	सत्य

कडवाहट और क्रोध को पकड़कर	क्रोधित हो, परन्तु पाप न करो
चोरी	मेहनत करो और बाँटों
व्यर्थता की बातें	उत्तम ाब्दों का प्रयोग करो जो अनुग्रह देती है
क्रोध, कडवाहट और गुस्सा	एक दूसरे को क्षमा
बदनामी करना, झूठी निंदा करना	नर्मस्पर्शी हृदय और दया भावना

अपनी बुलाहट के अनुसार सिद्ध जीवन जीयें और अपना पुराना मनु यत्व उतारकर नये मनु यत्व को पहन लें।

इफिसियों: मसीह की देह

शिक्षा 5: अध्याय 5

मुख्य वाक्य: जैसे ही हम परमेश्वर का अनुकरण करते हैं, तो हम उसके प्रकाश में रहते और प्रेम में चलते हैं।

न्पहला दिन

पढ़ें – इफिसियों 5:1–2

1. हम किसके जीवन को देखकर और उस प्रकार चलकर हम परमेश्वर का अनुकरण कर सकते हैं?

2. परमेश्वर ने अपना समर्पित प्रेम किस प्रकार प्रदर्शित किया?

3. प्रेम पूर्ण जीवन का वर्णन कीजिये? (देखिये 1कुरिन्थियों 13:4–7 और 1यूहन्ना 3:16)

दूसरा दिन

पढ़ें – इफिसियों 5:3–9

1. प्रभु के लोगों के बीच किस प्रकार का व्यवहार नहीं करना चाहिये?

2. जो परमेश्वर का अनुयायी हो उसे क्या चिन्ह दिया गया है?

3. प्रकाश के लोग संसार में कैसा प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करते हैं?

तीसरा दिन

पढ़ें – इफिसियों 5:10–13

1. आप कैसे जान पायेंगे कि किस से प्रभु प्रसन्न होता है?

2. अन्धकार के कार्य करने वालों पर प्रकाश क्या असर डालता है?

3. क्या आप देखते हैं कि आज विश्वासियों द्वारा ऐसा हो रहा है? क्यों या क्यों नहीं हो रहा है?

चौथा दिन

पढ़ें – इफिसियों 4:14–20

1. पद 14, 15 और 17 के अनुसार पौलुस किस प्रकार बताता है कि कौन प्रकाश में नहीं चल रहा है।

2. इन पदों के आधार पर हमें किस प्रकार उचित रीति से रहते हैं?

3. पौलुस कहता है हम ाराब पीकर मतवाले न बने वरन् पवित्र आत्मा से भरे हों? क्या यह सही तुलना है?

4. इन पदों के अनुसार एक विश्वासी जो पवित्रात्मा से भरा हो उसका विवरण करें?

पाँचवाँ दिन

पढ़ें – इफिसियों 5:21–32

1. पद 21 का क्या अर्थ है? क्या आप देख सकते हैं कि क्यों यह पद वचन के इस भाग का मूल पद हो गया है?

2. पौलुस पत्नियों से कैसा त्याग चाहता है? और पतियों का?

3. किस गूढ़ रहस्य का पौलुस इस अनुच्छेद में वर्णन कर रहा है?

4. क्या आपके समुदाय में वैवाहिक संबंधों में एक–दूसरे के प्रति ऐसा विनीत व्यवहार देखने में आता है?

5. इस अध्याय से एक चीज़ जो परमेश्वर ने आपको स्प ट की हो बताइये।

छठवाँ दिन

शिक्षा 5:	"प्रकाश में चलिये"
मूल पाठः	इफिसियों 5 अध्याय
मुख्य वचनः	इफिसियों 5:21 – "मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो।"
मुख्य वाक्यः	परमेश्वर को अनुकरण करने से हम प्रकाश में रहते और प्रेम में चलते हैं।
जीवन का सिद्धान्तः	जब हमारा जीवन पवित्रात्मा के वश में होता है तो हम नकारात्मकता को प्रभु के समान व्यवहार और कार्यों से बदल देते हैं।

सारांश – जैसे हर विश्वासी अपना कार्य सम्पूर्ण करता है वह परिकक्वता की ओर आगे बढ़ता है। यह अनुभवी प्रौढ़ता, नकारात्मकता, कठोर मन, उदासीनता, अपवित्रता, धोखे की इच्छा, झूठ, पापमय क्रोध, चोरी, व्यर्थ बातें, कड़वाहट, क्रोध और निन्दा, बदनामी करना, व्यभिचार, लालच, व्यर्थ बातें, भद्दे मज़ाक, मूर्खता, नशे की आदत और अन्य व्यसन आदि को समाप्त कर देते हैं। पौलुस हमें स्मरण कराता है कि हम अन्धकार में चल रहे थे। हम पूर्णतः बड़बडाये हुए, निराश थे। परन्तु अब हम रौशनी में हैं और अपने मस्ति क और धार्मिक विचारों को प्रयोग कर सकते हैं। अपनी समझ को आत्मिक स्तर पर नया करना सम्भव है केवल परमेश्वर के वचनानुसार पवित्र आत्मा की उपस्थिति में।

जैसे पवित्रात्मा हमारी सोच को बदलती है, हम एक भिन्न प्रकार के रहन–सहन को अपना लेते हैं। हमारी सोच और व्यवहार दोनों बदल जाते हैं। हम ारीर के कार्यों को अलग करना अरम्भ कर देते है। और पवित्राता, सच्चाई, मेहनत, बाँटना, क्षमा करना, प्रेम, धन्यवाद, अच्छाई, समझज्ञान को हर अवसर में प्रयोग करते हैं। परमेश्वर का समझ–ज्ञान पाकर, पवित्रात्मा से भर कर एक–दूसरे के प्रति समर्पित होते हुए परमेश्वर की आराधना खुशी से करते हैं। हालाँकि यह बदलाव प्रक्रिया में पूरा जीवन लग जाता है। परन्तु हम आज परमेश्वर से पूछे कि कहाँ से आरम्भ करें। अपनी बदलाव की इच्छा को माने और स्वयं को पवित्र आत्मा को समर्पित कर दे ंतो आप वह बदलाव देखेंगे जो आपने कभी नहीं देखा। आईये, पवित्रात्मा को और न सतायें परन्तु उसके कार्य को अपने अन्दर कार्य करने दें ताकि परमेश्वर की महिमा आपके द्वारा हो। जैसे प्रकाश अन्धकार को दूर कर सत्य को दर्शाता था उसी प्रकार परमेश्वर

की रौशनी द्वारा लोग हमारे अन्दर परमेश्वर के सत्रू को देख सकेंगे। वह हमारे अन्दर भिन्नता को देख पायेंगे। वह जान पायेंगे कि हम परमेश्वर के हैं।

जिस प्रकार हमें अलग जीवन जीने के लिये दिया गया है उसी प्रकार भिन्न प्रकार से प्रम करना भी सिखाया गया है। यह स्प ट रूप से बताने के पश्चात् कि हमारी सोच कैसी हो और विश्वासी समुदाय में हमारा व्यवहार कैसा हो, पौलुस अध्याय 5 को पूरा कर अध्याय 6 में प्रेम के विशेष विवरण को स्प ट करता है क्योंकि अ वह अपने समूह में नहीं पाया जाता। सारांश में, वह कहता है कि हमे अपने प्रभु पर भरोसे को बनाना है और एक दूसरे से प्रम करना है "प्रभु के आदर व महिमा के लिये एक दूसरे के प्रति समर्पित रहना है।" और यह तभी सम्भव है जब हम प्रभु को अपना सिर मानकर उसके अधीन हो जायें। हमें उनके अधीन होना है जिन्हें प्रभु ने हमारे ऊपर स्थापित किया है और विनम्रता से चलना हैं न कि उनको दबाना है जिन्हें हमारे अधीन किया है। याद रखें कि पौलुस स्वयं प्रेम के लिये बंदी बनाया गया था जो उसने गैर यहूदियों के लिये दर्शाया। सांकलों में होने पर भी उसने उनकी देखभाल की जिन्हें परमेश्वर ने उसके अधिकार में दिया। उसने अपने आराम की परवाह न करते हुए उनको शिक्षा और प्रोत्साहन दिया जिसने उसने परमेश्वर के राज्य में स्वागत किया था।

अध्याय 5:22 – 6:9 वचन के सरल अनुच्छेद नहीं हैं यह इतिहास में जो हमने देखा है उसकी प्रारम्भ से बहुत छानबीन के बाद लिखे गये हैं। परन्तु यह पद लोगों के दु टता का पु टकरण नहीं है। परमेश्वर बुरा–भला बोलने वाला नहीं है और न ही पौलुस इसकी स्वीकृति देता है। यह ऐसा नहीं कि लोगों के स्वार्थीपन की निंदा करें जो हमने कलीसिया समुदायों और संसार में देखा है। वास्तव में, प्रभु स्पष्ट रूप से दोनों का खंडन करते हैं। बहुत बार उसने उत्तेजित होकर फरीसियों के अनुचित व्यवहार और विवादों के लिये झिड़का है (मत्ती 20:25–28) उसने अपने शि यों को उचित नेतृत्व और अच्छा शि य होने के निर्देश दिये हैं।

यह मान लिजिये कि यह निर्देश हमारे मूल्यों और उपयोगिता या योग्यता का प्रतिबिम्ब रूप नहीं है। हम प्रभु में एक समान है, उसके उत्तराधिकारी और उसके अनुग्रह से सेवक हैं। जैसा अध्याय 4 कहता है हम एक प्रभु को बाँटते हैं, समान आत्मा और समान बुलाहट के लिये हैं। फिर भी परमेश्वर की बुद्धि–समझ की विविधता के कारण हम आपसी प्रेम को एक–दूसरे से अलग प्रकार से बाँटने के लिये बुलाये गये हैं। बिल्कुल उसी प्रकार जैसे यीशु में स्वयं को पिता को हम लोगों के लिये बलिदान होने के लिये समर्पित किया उसी प्रकार हमें भी आपस में एक–दूसरे के प्रति प्रभु को सिर मानकर समर्पित होने और प्रेम से एक–दूसरे की सेवा

करने को कहा है। ऐसी विनम्रमा और स्वार्थविहीन व्यवहार इस संसार के विपरीत है और एक स्प ट चिन्ह है परमेश्वर को समर्पित लोगों का।

जब आत्मा हमारे जीवन पर नियंत्रण रखती है तो नकारात्मक व्यवहार और कार्य प्रभु समान व्यवहार और कार्य से बदल जाते हैं।

इफिसियों: मसीह की देह

शिक्षा 6: अध्याय 6

मुख्य वाक्य: परमेश्वर हमें आत्मिक लड़ाई के लिये आत्मिक हथियार देता है, जो हमारी रक्षा करें।

पहला दिन

पढ़ें – इफिसियों 6:1–4

1. उस आज्ञा को लिखिये जो एक प्रतिज्ञा बद्ध है (व्यवस्थाविवरण 6:1,2)।

2. यह किस प्रकार व्यवहारिक रूप से क्रियान्वित किया जा सकता है?

3. कैसे अभिभावक अपने बालकों पर क्रोधित होते हैं?

4. अभिभावकों को कौन से महत्वपूर्ण निर्देश दिये गयो हैं?

5. आप अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिये क्या करते हैं कि वह जब आपकी आज्ञापालन करते हैं तो वह परमेश्वर का आज्ञापालन करते हैं?

6. आपका परिवार इस अध्याय को कैसे करता है?

दूसरा दिन

पढ़ें – इफिसियों 6:5–9

1. आप सम्पूर्ण मन से सेवा से क्या समझते हैं?

2. एक विश्वासी को अच्छा कार्य करने की प्रेरणा कैसे मिलती है?

3. इसका क्या अर्थ है "कि प्रभु के साथ कोई भेदभाव नहीं है"?

4. आप दूसरों को किस प्रकार दर्शायेंगे कि आप प्रभु में एक समान हो?

तीसरा दिन

पढ़ें – इफिसियों 6: 10–12

1. हमें पद 10,11 में क्या करने के निर्देश दिये गये हैं?

2. हमें किस कि सामर्थ प्राप्त हुई? और हम उसे किस प्रकार ले सकते हैं?

3. पद 11, 12 अनुसार जिन आत्मिक ाक्तियों से हम संघ ा कर रहे हैं उनका वर्णन करें।

चौथा दिन

पढ़ें – इफिसियों 6:13–17

1. हम, विश्वासियों को परमेश्वर के पूर्ण कवच के रूप में क्यों रखा गया है?

2. कवच के प्रत्येक भाग को जो प्रभु देता है लिचों और वह देह पर किस स्थान पर प्रयोग होता है और उसका क्या उद्देश्य है?

3. किस आदेश की पुनरावृत्ति हुई है? आप क्यों सोचते हैं कि यह बार–बार क्यों दिया गया हैं?

पाँचवाँ दिन

पढ़ें – इफिसियों 6:18–24

1. पौलुस ने कब और क्या प्रार्थना करने के लिये कहा है? (पद 18 देखें)

2. पौलुस की अपने लिये क्या प्रार्थना की विनती उसकी प्रार्थमिकताओं को बताती है (पद 19)?

3. आप अपने आस–पास वालों से क्या चाहते हैं कि वे आपके लिये प्रार्थना करें?

4. इस अनुच्छेद से परमेश्वर आपसे क्या कह रहा है? आपकी क्या प्रक्रिया होगी?

5. जो उसने आपसे कहा, आप उसके लिये क्या करेंगे? लिखिये?

छठवाँ दिन

शिक्षा 2: "परमेश्वर का कवच पहन लो"

मूल पाठः	**इफिसियों 2 अध्याय**
मुख्य वचनः	**इफिसियों 6:13 – "इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको"**
मुख्य वाक्यः	**परमेश्वर हमें आत्मिक युद्ध के लिये आत्मिक हथियार देता है जो हमारी रक्षा करें।**
जीवन का सिद्धान्तः	**प्रार्थना और वचन सबसे ाक्तिशाली हथियार हैं जो हमें विजयी होने में स्थिरता प्रदान करते हैं।**

सारांश – पौलुस अध्याय 6 की पहली दस आयतों में अधिकार और सर्मपण की शिक्षा देता है। प्रत्येक निर्देश में वह अपील करता है कि हमारी देश–भाक्ति परमेश्वर पर निर्भर है। वह हमारा सब पर प्रधान है और वह हमारा दूसरों के प्रति व्यवहार का हिसाब रखता है।

पौलुस के दिशा–निर्देश, प्रेम और एक–दूसरे के प्रति समर्पण जो नम्रता से स्वयं का त्याग करने के लिये हैं उसमें पौलुस अपनी कलीसिया का सम्पूर्ण चित्रण करता हैः एक सैनिक। हम विनम्र होने के लये बुलाये गयो हैं न कि कमज़ोर और अप्रभावपूर्ण होने के लिये। अध्याय 5:14–16 में वह कहता है "हे सोने वाले जाग और मृतकों में से जी उठ तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी।" इसलिये सचेत हो कि आप कैसे चलते हो, मूर्खों के समान नहीं वरन् समझदारों के समान, समय का सदुपयोग करते हुए क्योंकि दिन बुरे हैं। सचमुच हम युद्ध के समय में जन्मे हैं। हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिये कि इस संसार में हमारे ात्रु हैं। परन्तु पौलुस के अनुसार केवल ात्रु के बारे में जानना काफी नहीं है। बल्कि युद्ध के सारे हथियारों को जानना भी आवश्यक है ताकि हम हर समय में प्रार्थना से सचेत रहें। पौलुस हमें उन हथियारों के बारे में बता रहा है जो प्रभु से हमें प्राप्त होती है, ाान्ति का सुसमाचार विश्वास, उद्धार और परमेश्वर की पवित्रात्मा। हमारे पास अपने ात्रु का सामना करने के सब साधन

मौजूद हैं क्योंकि हम, परमेश्वर के सम्पूर्ण कवच से सुसज्जित हैं, और आत्मा में होकर प्रार्थना करते हैं। "इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।" (इफिसियों 6:13) एक सिपाही का उद्देश्य क्या है, युद्ध? सचमुच यही परमेश्वर हमारे अन्दर कर रहा है। यह सामर्थ से जो आत्मा हमारे भीतर भरी गई हम युद्ध करें। और कितना बड़ा सौभाग्य हमें मिला है कि हम उस विजय का एक हिस्सा बनें।

यह उन लोगों के लिये बड़े सौभाग्य की बात है कि उसने उन्हें बुलाया और प्रत्येक आत्मिक आशी ा से सुसज्जित किया, ताकि उस देह में, प्रभु सिर हो, और उस मन्दिर में वह वास करे, और यह रहस्य सभी लोगों के देखने के लिये हो एक नया मनु य कार्य और व्यवहार में जो रौशनी में त्रुटि को सत्य में स्प ट देख पाये। और एक सिपाही के पदचिन्हों पर चलें जिसने हमारे उस युद्ध को जीता है और ज़रूरत पडने पर मृत्यु तक वफादार रहें। यह सौभाग्य है उनके लिये जो प्रभु यीशु में स्वर्गीय आशी ाों से सुसज्जित होने के लिये बुलाये गये हैं। यह एक बुलाहट है।

प्रार्थना और सुसमाचार वह महत्वपूर्ण हथियार है जो विजयी होने और स्थिर होने में हमारी सहायता करते हैं।

फिलिप्पियों: सम्पूर्ण और महत्वपूर्ण जीवन का रहस्य

लेखक:

पौलुस एक यहूदी और मसीहों को सताने वाला, वह परमेश्वर द्वारा चुना गया, ताकि गैर यहूदियों में यीशु का सुसमाचार पहुँचाया जाये। प्रेरितों के काम 9 अध्याय में दमिश्क के मार्ग में जाते हुए उसकी और यीशु की हुई बातचीत अंकित है। तब जो ाऊल कहलाता था, और दमिश्क के मार्ग में मसीही लोगों को बंदी बनाने जा रहा था, परन्तु उसे जीवित प्रभु ने रोका। उसका सामना सत्य से हुआ और उसे एक नया नाम दिया गया। उसका ह्रदय और जीवन हमेशा के लिये बदल गये। एक सताने वाले से वह एक प्रेरित जाना गया, 'पौलुस' नाम से। हमने देखा सुसमाचार की सामर्थ को जिसने उसका जीवन अन्दर से बाहर तक बदल कर रख दिया। वह एक महान मिशनरी जाना गया और एक महत्वपूर्ण रूप से नये नियम का अंशदाता अर्थात् वचन का प्रतिसहायक। क्या आप इच्छुक हैं। और सुनना चाहते है कि परमेश्वर कैसे जीवन के मार्ग को ही बदल देता है?

समय

पौलुस ने यह पत्र फिलिप्पी की कलीसिया को अपनी प्रथम यात्रा के 11 व र्ा पश्चात् लिखा। उसने यह रोम में कारागाह के समय लिखा था, प्रेरितों के काम 28:16, 30–31। फिलिप्पयों 2:20–26 में पौलुस जानता था कि उसका जीवन दाँव पर लगा है और वह कोर्ट के फैसले का इन्तज़ार कर रहा था। इस कारण वह 1:21 में स्प ट कहता है, "मेरे लिये जीवित रहना मसीह है और मर जाना लाभ है।"

दर्शकगण :

फिलिप्पी मकिदुनिया जिले में रोम की एक कालोनी था। जो आजकल ग्रीस के नाम से जाना जाता है। वहाँ मिले–जुले समूह के लोग रहते थे, जो अन्धविश्वास और मूर्तिपूजा को त्याग कर प्रभु यीशु पर विश्वास लाये। हमें इससे समीप से पता चलेगा कि किस प्रकार फिलिप्पी में कलीसिया का आरम्भ हुआ, प्रेरितों के काम 16:1–13 में पौलुस, सीलास, लूका और युवा तीमुथियुस पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के हिस्सा थे, जब पौलुस के एक आदमी के कहने पर दर्शन मिला "मकिदुनिया आओ और सहायता करो।" इस दर्शन के परिणामस्वरूप उन्होंने अपनी सामान्य जीवन चर्चा बदल दी और मन्दिर की ओर यीशु का सुसमाचार चल पड़े। जब मन्दिर नहीं मिला तो वह ाहर के बाहर गेट पर गये और वहाँ पर वह लुदिया किनारे स्त्रियों के एक समूह को प्रार्थना करते पाया। वहाँ पर वह लुदिया से मिले जो एक व्यापारी महिला

थी और वह बैंगनी वस्त्र का व्यापार करती थी। परमेश्वर उसके पास गया और उसके हृदय को उद्धार का सन्देश प्राप्त करने के लिये तैयार किया (पद 16)। प्रेरितों के काम 16:14 में लुदिया कहती है, "और प्रभु ने उसका मन खोला कि वह पौलुस की बातों पर चित्त लगाए।" उस प्रभु से सामना में उसका जीवन बदल गया, जैसे पौलुस दमिश्क के मार्ग पर पलट गया था। प्रभु ने लुदिया के जीवन को फिलिप्पी में कलीसिया के स्थापन के लिये प्रयोग किया और पूरे यूरोप में सुसमाचार को फैलाने के मार्ग खुल गये। क्या आप लुदिया के समान सत्य के लिये भूखे हैं?

वि ाय :

फिलिप्पी पौलुस के 13 पत्रों में से एक है, पर यह बहुत ही व्यक्तिगत् और खुशी का पत्र उनके लिये गया था। इन चार छोटे अध्यायों में उसने "बहुतायत के जीवन" का सत्य का रहस्य खोला। यूहन्ना 10:10 यीशु ने कहा; "मैं चाहता हूँ कि तुम जीवन पाओ और बहुतायत का जीवन पाओ।" फिलिप्पी की पुस्तक खुशी की पुस्तक मानी जाती है। प्रसन्नता या आनन्द परिस्थितियों पर निर्भर नहीं है, परन्तु यह परिस्थितियों में बदलता है। क्या हम इस रहस्य को अपने जीवनों में उन्नति या वृद्धि नहीं करने देना चाहते?

फिलिप्पियों: सम्पूर्ण और महत्वपूर्ण जीवन का रहस्य

शिक्षा 1: अध्याय 1

मुख्य वाक्य: पौलुस ने मुश्किलों को महान् उद्देश्य में परिवर्तित कर दिया।

<u>पहला दिन</u>

पढ़ें – फिलिप्पियों 1:1–6

1. आप पौलुस के व्यवहार के लिये क्या कहेंगे जो उसने फिलिप्पी के प्रति किया (पद 1–5) में?

2. पद 6 में क्या प्रतिज्ञा की गई है?

<u>दूसरा दिन</u>

पढ़ें – फिलिप्पियों 1:7–11

1. उन चीज़ों के नाम लिखिये जो पद 9–11 में पौलुस ने प्रार्थना में माँगे।

   (क)

   (ख)

   (ग)

   (घ)

2. क्या आपने कभी अपने या दूसरों के लिये इन चीज़ों की प्रार्थना की है?

3. परमेश्वर क्या चाहता है कि तुम उसके लिये प्रार्थना करो?

तीसरा दिन

पढ़ें – पद 9–11

1. आप उस प्रेम और ज्ञान और दृ ि टज्ञान को पाने के लिये क्या करेंगे?

2. आप पवित्र और दो ारहित जीवन को पाने के लिये क्या कर सकते हैं?

चौथा दिन

पढ़ें – पद 12–18

1. पौलुस के बन्दीगृह में होने से क्या फायदा हुआ (पद 12–18)?

2. आज आप किन हालातों में स्वयं को बन्दी पाते हो?

3. आपके कठिन परिस्थिति में या बन्दी होने से आपको या दूसरों को क्या लाभ होगा?

पाँचवाँ दिन

पढ़ें – पद 18–30

1. पौलुस के जीने का क्या कारण था?

2. पौलुस के मर जाने का क्या कारण था?

3. 3–4 विशे ातायें बतायें जो प्रदर्शित की गई जब पौलुस को बन्दीगृह से आज़ाद किया जा रहा था?

4. इस प्रकार का समान व्यवहार किस प्रकार आपके जीवन में आज बदलाव कर सकता है?

छठवाँ दिन

शिक्षा 1: "क ट उठाने में प्रसन्नता"

मूल पाठः	फिलिप्पयों 1 अध्याय
मुख्य वचनः	फिलिप्पयों 1:21 – "मेरे लिये जीवित रहना मसीह और मर जाना लाभ है।"
मुख्य वाक्यः	पौलुस ने मुश्किलों को महान् उद्देश्य में परिवर्तित कर दिया।
जीवन का सिद्धान्तः	आईये, हम जीवन की सामान्य कठिनाइयों में प्रसन्न होना सीखें।

सारांशः पौलुस ने अपना प्रसन्नता भरा पत्र फिलिप्पियों के लोगों का सुसमाचार को फैलाने में सहभागी होने पर धन्यवाद के साथ आरम्भ किया। फिर अपने प्रिय मित्र के लिये प्रार्थना की (पद 9–11) ऐसी प्रार्थना जो हम अपने जानने वालों के लिये कर सकते हैं। पौलुस बन्दीगृह से लिख रहा था, रोम में साँकलों में बन्धा हुआ, फिर भी वह प्रसन्नतापूर्वक अपनी परिस्थितियों में लाभदायक होने पर इशारा करता है। बजाय अवरोध उत्पन्न करने के वह यीशु के समाचार को फैला रहा था। प्रत्येक जन जानता था कि वह अपने विश्वास के लिये जेल है और इस बात ने अन्य विश्वासियों को निर्भय बना दिया और उन्हें प्रभु यीशु की चीज़ों को जानने के लिये उत्सुक बना दिया। साथ ही 2 व र्ा तक साँकलों में जकड़ा होने पर भी भिन्न–भिन्न स्तर के लोगों तक उसकी पहुँच थी। पौलुस ने देखा कि उसकी कठिनाइयों में भी परमेश्वर का महत्वपूर्ण उद्देश्य था। विश्वासी होने के नाते हमें प्रभु पर विश्वास करने का अवसर दिया गया है। इसमें उसके साथ क ट भी ाामिल है। (1 पतरस 2:21) स्वर्ग के नागरिक होने पर एक साथ आत्मा में, एक उद्देश्य होने से हमें एक–दूसरे के प्रोत्साहन देते हुए आश्रित रहना है।

फिलिप्पियों: सम्पूर्ण और महत्वपूर्ण

जीवन का रहस्य

शिक्षा 2: अध्याय 2

मुख्य वाक्य: यीशु सच्चा सेवक होने का हमारा आदर्श है।

<u>पहला दिन</u>

पुनःआकलन 1 अध्याय

1. किस प्रकार से पौलुस का अपनी बेड़ियों और कारावास के प्रति व्यवहार आपको किस प्रकार प्रोत्साहित करता है?

2. कारावास का कौन सा भाग आप समझते हैं कि वह पौलुस के लिये सबसे अधिक क टपूर्वक समय होगा?

<u>दूसरा दिन</u>

पढ़ें – फिलिप्पियों 2 अध्याय

1. पौलुस ने क्या कहा, जिससे उसकी खुशी सम्पूर्ण होगी?

2. पद 3 और 4 में कौन से 4 व्यवहार हैं, जो लोगों के बीच एकता में अवरोध उत्पन्न करते हैं?

3. पौलुस क्या बताता है, जिससे हम व्यवहार और सोच बदल सकते हैं?

4. इन पदों के अनुसार प्रभु ने जिन व्यवहारों का चयन किया, उनकी सूची बनायें।

(क) मत्ती 11:29

(ख) मत्ती 12:18–20

(ग) मत्ती 8:20

(घ) यूहन्ना 5:19, 30

(ड़) यूहन्ना 3:17; 8:11

(च) मत्ती 9:36; मरकुस 6:34

तीसरा दिन

पढ़ें – फिलिप्पियों 2:5–11

1. प्रभु के बारे में जितने भी उपनाम इस अनुच्छेद में दिये है उन्हें लिखें?

2. आखिरकार आराधना व भक्ति की कौन सी मुद्रा प्रभु के समक्ष मनुष्य रखते हैं?

चौथा दिन

पढ़ें – फिलिप्पियों 2:12–18

1. पद 15 व 16 निहित कौन से रास्ते हैं "अपने उद्धार में लगे रहने के।"

2. किस प्रकार विश्वासी लोग अन्धकार भरे संसार में चमक सकते हैं?

पाँचवाँ दिन

पढ़ें – फिलिप्पियों 2:19–30

1. पौलुस ने तीन व्यक्ति का नाम लिया है कि वह एक आदर्श हैं। वह कौन हैं और वह कैसे एक अच्छा उदाहरण हैं?

2. क्या कोई ऐसा जन है जो आपके लिये उदाहरण रहा हो?

3. क्या आपके समक्ष के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करें, जिन्हें उसने आपके जीवन से जोड़ा।

छठवाँ दिन

शिक्षा 2: **"सेवा में प्रसन्नता"**

मूल पाठः	**फिलिप्पियों 2 अध्याय**
मुख्य वचनः	**फिलिप्पियों 2:5 – "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था, वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो"**
मुख्य वाक्यः	**यीशु एक सच्चे सेवक का सम्पूर्ण उदाहरण है।**
जीवन का सिद्धान्तः	**हमारी विनम्रता का व्यवहार इस अन्धकार के संसार में प्रकाश देने वाला है।**

सारांशः पौलुस फिलिप्पियों की कलीसिया में प्रेम के अभाव और एकता को लेकर बहुत संवेदनशील था। एक के झगड़े ने प्रभु की साक्षी को बर्बाद किया और वह प्रभु के अनुसार नहीं चल रहे थे। पद 2 में उसने सभी से एक मन होकर एक उद्देश्य को पूरा करने की याचना की। पौलुस ने प्रभु की ओर संकेत किया कि उन्हें प्रभु यीशु को आदर्श मानकर विनम्रता और आपसी भाईचारे से रहना चाहिये। उसने अपने अधिकार अपने तक नहीं रखे, बल्कि स्वयं को खाली कर दिया और सब परमेश्वर के हाथ में छोड़ दिया। पद 12 में, पौलुस कहता है "अपने उद्धार का कार्य डरते और काँपते हुए पूरा करने जाओ।" यह प्रभु से हमारे संबंध की ओर बढ़ने की कोशिश है। पद 13 में परमेश्वर हमें अपने मार्ग चुनने और उस पर बढ़ने के लिये ाक्ति और सामर्थ देता है। जब हमारा ऐसा व्यवहार यीशु समान होगा, तो हम इस संसार में चमकदार सितारे के समान चमकेंगे।

हमारी विनम्रता का व्यवहार इस अन्धेरे में प्रकाशवान होगा।

फिलिप्पियों: सम्पूर्ण और महत्वपूर्ण

जीवन का रहस्य

शिक्षा 3: अध्याय 3

मुख्य वाक्य: जीवन में प्रभु को जानने की तुलना में सब व्यर्थ है।

<u>पहला दिन</u>

पढ़ें – फिलिप्पियों 3:1–4

1. पौलुस हमको प्रसन्नतापूर्वक रहने की याद दिलाता है, हमारे जीवन की स्थिति के कारण नहीं, बल्कि एक मनु य के कारण। वह मनु य कौन है?

2. इस वार्तालाप से पूर्व पौलुस अपना भरोसा किस पर रखता है?

<u>दूसरा दिन</u>

पढ़ें – फिलिप्पियों 3:5–11

1. उन चीजों की व्याख्या कीजिए, जिन पर प्रभु में आने से पूर्व वह घमण्ड करता था?

2. पौलुस कैसे इन सांसारिक फायदों की तुलना परमेश्वर को जानने से करता है? (पद 8)

3. पौलुस किस चीज को जीवन की उच्चतम उपलब्धि मानता है?

<u>तीसरा दिन</u>

पढ़ें – इफिसियों 3:14–15; फिलिप्पियों 3:7–11

1. कुछ समय के लिये अपने और दूसरों के लिये इन वस्तुओं हेतु प्रार्थना करें। (इफिसियों 3:14–19)

2. कौन सी ऐसी तीन चीजें हैं, जो प्रभु की पहचान के साथ गहनता से जुड़ी हैं?

चौथा दिन

पढ़ें – फिलिप्पियों 3:12–14

1. उन उक्तियों को लिखिये, जो पौलुस के जीवन के अंत में भी वह अपने पूर्व जीवन की उपलब्धियों को नहीं गिन रहा था, बल्कि अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने से नहीं रुका। (पद 12–15)

2. पौलुस ने कौन से तीन कदम उठाए? (पद 12–15)

3. पौलुस का लक्ष्य क्या था?

पाँचवाँ दिन

पढ़ें – फिलिप्पियों 3:17–21

1. पौलुस कुछ व्यक्तियों के लिये रोया। उन लोगों की क्या विशे ाताएँ थीं? (पद 18–19)

2. पौलुस आपको कौन से तीन कारण देता है कि आप पौलुस को उदाहरणार्थ मानें? (पद 20–21)

छठवाँ दिन

शिक्षा 4:	**"प्रभु को जानने की खुशी"**
मूल पाठ:	**फिलिप्पियों 3 अध्याय**
मुख्य वचन:	**फिलिप्पियों 3:10 – "ताकि मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ्य को और उसके साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ।"**

मुख्य वाक्यः	प्रभु को जानने की तुलना में जीवन में सबकुछ व्यर्थ हैं।
जीवन का सिद्धान्तः	प्रतिदिन अपने अहम् को समाप्त करने का प्रयास करें।

सारांशः एकता के आंतरिक खतरे के प्रति सचेत करने के पश्चात् पौलुस ने बाहरी खतरों को स्प ट किया। उसने विश्वास में स्वयं के जीवन का भेद दिखलाया। खतना, परिवार सम्बन्धी, व्यक्तिगत् चरित्र और जीवन के लक्ष्य द्वारा। अब उसका लक्ष्य केवल प्रभु को जानना और उसके उद्देश्य को पूरा करना था, जिसके लिये उसने उसको बनाया था। पद 12–13 में वह स्प ट करता है कि यह जीवन भर का प्रयास है, पर हम इसे पूरा करेंगे।

जब हम अपनी कठिनाईयाँ परमेश्वर को सौंप देते हैं, उसके साथ चलने का निश्चय करते हैं, उसकी महिमा के लिये; तब आप जानेंगे के आपका क ट उठाना व्यर्थ नहीं गया। उन्नति का कोई भी अवसर न खोएँ।

फिलिप्पियों: सम्पूर्ण और महत्वपूर्ण

जीवन का रहस्य

शिक्षा 4: अध्याय 4

मुख्य वाक्य: धन्यवाद की प्रार्थना हमारे हृदय को परिवर्तित कर देती है।

<u>पहला दिन</u>

पढ़ें – फिलिप्पियों 4:1–3

1. पद एक में क्या आज्ञा दी गई है?

2. किनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे जायेंगे?

<u>दूसरा दिन</u>

पढ़ें – फिलिप्पियों 4:4–7

1. कौन सी आज्ञा खुशी की आज्ञा से जुड़ी हुई है?

2. हम उत्साहित होने के बजाय क्या कर सकते हैं?

3. चिन्ता के लिये क्षमा माँगने और उसे बाँटने का क्या परिणाम होगा?

<u>तीसरा दिन</u>

पढ़ें – फिलिप्पियों 4:8–9

1. हम इस वि ाय में क्या सोचते हैं?

2. पद 9 में क्रियान्वित होने का क्या मूल ाब्द हैं? (देखें याकूब 1:22–25)

चौथा दिन

पढ़ें – फिलिप्पियों 4:10–13

1. पौलुस ने किन परिस्थितियों का सामना किया और उसने उनसे क्या सीखा?

2. पौलुस के सन्तु ट होने का क्या रहस्य है (पद 13)? यह क्या आपके प्रोत्साहित या निरूत्साहित करती है?

पाँचवाँ दिन

पढ़ें – फिलिप्पियों 4:14–23

1. जब फिलिप्पियों ने बताया तो पौलुस की उनके लिये क्या इच्छा थी?

2. फिलिप्पी क्यों सुगन्धित वस्तुओं के उपहार देते थे?

3. कौन सी प्रतिज्ञा हमारे देने से जुड़ी है?

4. क्या आपने कोई क्रिया का प्रयोग किया इस अध्ययन के दौरान?

छठवाँ दिन

शिक्षा 4: "धन्यवाद की प्रार्थना में खुशी"

मूल पाठः	फिलिप्पियों 4 अध्याय
मुख्य वचनः	फिलिप्पियों 4:13 – "जो मुझे सामर्थ देता है, उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।"
मुख्य वाक्यः	धन्यवाद की प्रार्थना हृदयों को बदल देती हैं।
जीवन का सिद्धान्तः	धन्यवाद करने का अभ्यास और धन्यवाद देना सन्तु ट होने का रहस्य है।

सारांशः अपने अन्तिम अध्याय में पौलुस चिन्ताओं के बीच ाान्ति की रेसिपी अर्थात गूढ मंत्र देता है। उसकी सामग्री में प्रार्थना धन्यवाद और समर्पण ाामिल है। हमें परमेश्वर से अपने संदर्भ वि ाय के लिये प्रार्थना करनी है और धन्यवाद के साथ उसके हाथों में सौंप देना चाहिये। परमेश्वर की ाान्ति जो हमारी समझ से परे है, हमारे तन मस्ति क पर छा जायेगी। पौलुस अपने जीवन के कुछ उदाहरण बाँटाता है। जिनमें पहला है सन्तुि ट। उसकी 20 व ा की सेवा में उसने बहुत अधिक क ट सहे। फिर भी उसने जब भी जहाँ भी हुआ स्वयं को सन्तु ट करना सीखा। पद 13 में उसने बड़े रहस्य को बताया "जो मुझे ाक्ति व सामर्थ देता है, उसमें में सब कुछ कर सकता हूँ।" यह दृढ़ विश्वास तब होता है जब हम अपने पर भरोसा न करके परमेश्वर पर भरोसा करते हैं। जैसे उसने प्रभु का इस प्रकार अनुयायी हुआ उसने फिलिप्पियों के वासियों को भी ऐसा करने को कहा। उसने आपना सम्पूर्ण जीवन उसके समक्ष रख दिया, उसने एक अच्छी दौड़ दौड़ी और विश्वास को पकड़े रखा। परमेश्वर वही हमारे भीतर आज भरना चाहता है। क्या आप पौलुस से सहमत हैं कि परमेश्वर आपके जीवन में है आपकी सामर्थ है?

धन्यवाद का अभ्यास और देना सन्तुि ट का रहस्य है।